29 मई

श्लोकसंख्या-13

"संकल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गता त्वम्।
चूतेन संश्रितवती नवमालिकेयमस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः॥"

शब्दार्थ – मया=(काश्यपेन) काश्यप मुनि द्वारा। तवार्थे = तुम्हारे लिए (शकुंतला के लिए) (त्वन्निमित्तम)। प्रथममेव = पहले ही (पूर्वमेव)। संकल्पितं = (मनसा ~~निश्चितं~~ निश्चितत्वं) प्रयुक्त इच्छाशक्ति। आत्मसदृशं = अपने गुणों के समान (स्वगुणैस्तुल्यम)। भर्तारं =(पतिम) पति को। त्वं = शकुन्तला। सुकृतैः = पुण्यों से (पुण्यैः)। गता = (प्राप्ता) प्राप्त हुई है। इयम = एषा (यह नवमालिका)। नवमालिका = वनज्योत्स्ना। चूतेन =(आम्रेण) आम से। संश्रितवती = मिल गई है (संगतवती) मिलने के अर्थ में। सम्प्रति = इस समय (इदानीम)। अहं = काश्यपः (काश्यपमुनि)। अस्यां = इसमें (वनज्योत्स्नायाम) नवमालिका में। त्वयि =(शकुन्तलायां) तुममें। वीतचिन्तः =(चिन्तामुक्तः) निश्चिन्त।

प्रसङ्ग - काश्यप मुनि शकुन्तला के संदर्भ में कहते हैं-

हिन्दीअनुवाद - मैंने तेरे लिए पहले ही जिसका निश्चय(संकल्प) किया था, अपने तुल्य (समान) उस पति को तुम (अपने) पुण्यों (सत्कर्मों) से प्राप्त हुई हो। यह नवमालिका आम से संयुक्त (मिल गई) हो गयी है। अब मैं इसकी और तेरी (तुम्हारी) ओर से निश्चिन्त (चिन्तामुक्त) हो गया हूं।

व्याकरणभाग / टिप्पणी

(क) तवार्थे = तव + अर्थे। अर्थे – लिए अर्थ में अव्यय है। (तेरे लिए)

(ख) संश्रितवती = सम् + श्रि + क्त (भावे) ⇒ संश्रित
= संश्रित + मतुप + ङीप (ई)।

(ग) वीतचिन्तः – वीता चिन्ता यस्य सः, बहुव्रीहिसमासः। जिसकी चिन्ता समाप्त हो गई है, वह (काश्यप ऋषि के संदर्भ में कहा जा रहा है)

29 मई

(घ) आम और नवमालिका में नायक-नायिका का आरोप होने से (1) समासोक्ति है।

(2) शकुन्तला और नवमालिका दोनों प्रस्तुत (उपस्थित) हैं, दोनों का वीतचिन्तः के साथ सम्बन्ध होने से तुल्ययोगिता है।

(3) अनुरूप पतियों के मिलने के कारण सम अलंकार है।

(4) नवमालिका तथा शकुन्तला - दोनों का अपने पतियों से मिलना निश्चिन्तता का कारण है। अतएव काव्यलिङ्ग अलंकार है।

वसंततिलका छन्द है।